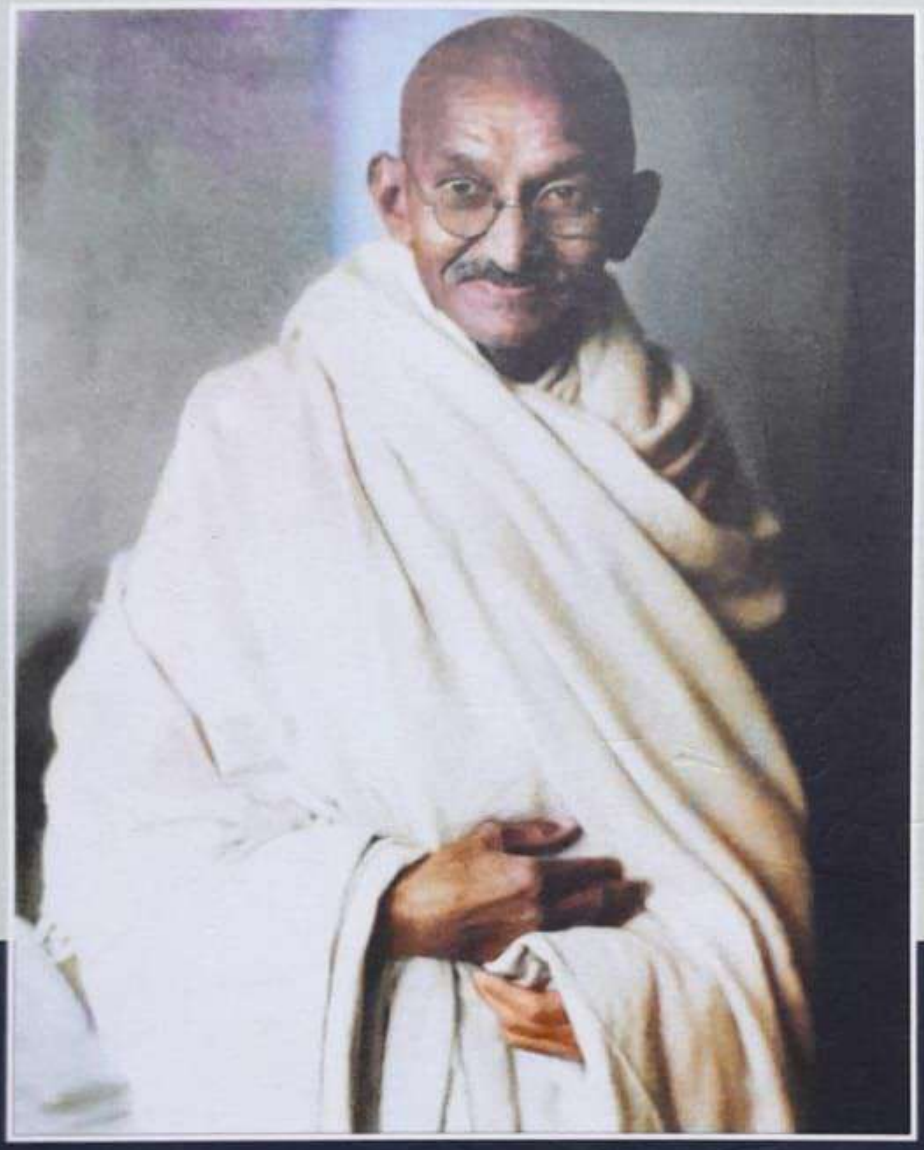

गाँधी वैचारिकी

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. मीनाक्षी शर्मा

19. महिला उत्थान में गांधी जी का योगदान 174
–डॉ. मनीषा सिंह

20. राष्ट्रभाषा हिंदी और गांधीजी की प्रासंगिकता 179
–डॉ. दिग्विजय शर्मा

21. सत्य ही ईश्वर है – महात्मा गांधी 190
–दीपिका रावत

22. महात्मा गाँधी और खादी आन्दोलन 202
–डॉ. नुज़हत फ़ात्मा

23. महात्मा गांधी की राजनीतिक दृष्टि 210
–डॉ. राजीव दूबे

24. गाँधी दर्शन व्यक्तिवाद एवं समाजवाद का समन्वयक 225
–डॉ. ऋचा शुक्ला, डॉ. वन्दना शर्मा

25. गाँधी के सिद्धांत और आधुनिक युग 230
–डॉ. प्रज्ञा मिश्रा

26. गाँधी जी के नेतृत्व में चलाये गये आन्दोलन 240
–डॉ. हेमाराम

27. अहिंसावादी चिन्तक के रूप में महात्मा गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक अध्ययन 249
–डॉ. शिखा जैन

28. महात्मा गांधी और साम्प्रदायिकता 256
–डॉ. पवन कुमार शर्मा

29. गाँधी जी के धर्म एवं राजनीति सम्बन्धी विचारों का एक विश्लेषण 264
–डॉ. रीना

30. व्यक्तित्व का टकराव: गाँधी और अम्बेडकर 271
–डॉ. घनश्याम कुशवाहा

23

महात्मा गांधी की राजनीतिक दृष्टि

आधुनिक भारत में महात्मा गांधी एवं भारतीय अस्मिता एक–दूसरे के पर्यायवाची है। ऐसा इसलिए कि यदि आधुनिक भारत की संरचना में उनकी भूमिका नहीं रही होती तो वर्तमान समय में भारत की स्थिति क्या होती? यह प्रश्न यक्ष प्रश्न के रूप में न केवल भारत यद्यपि सम्पूर्ण विश्व के समक्ष उपस्थित रहता। निःसन्देह भारत की स्वतन्त्रता तो अवश्यम्भावी थी लेकिन क्या आज की पीढ़ी यह अनुमान लगा सकती है, कि भारत को 1947 में प्राप्त स्वतन्त्रता गांधी के बिना सम्भव थी? यहां यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जीवन पर्यन्त गांधी जी ने वैचारिक एवं व्यावहारिक दोनों धरातलों पर कार्य किया। आधुनिक भारत इन्हीं भागीरथ प्रयत्नों का परिणाम है।

वर्तमान में गांधी जी के विचारो अथवा सिद्धान्तों को गांधीवाद की संज्ञा प्रदान की जाती है। यद्यपि गांधी जी स्वयं अपने विचारों को किसी 'वाद' की परिधि में बाधना नहीं चाहते थे क्योंकि उन्होंने कभी भी किसी मौलिकता का दावा नहीं किया। उन्होंने कभी अपने विचारों को तर्कसंगत ढ़ग से संकलित नहीं किया उनकी कुछ मौलिक धारणायें अवश्य थीं और वे जीवन–पर्यन्त उनका पालन करते रहे लेकिन उन्होंने समय–समय पर अपने विचारों को सन्दर्भो के अनुसार संशोधित भी किया।

आज जब भी गांधी के विचारों की बात की जाती है, उसके प्रासंगिकता का प्रश्न खड़ा हो जाता है। यह भी सत्य है कि गांधी जी के आदर्शवादी दृष्टिकोण के प्रति संदेह निराधार नहीं है। पूरी दुनिया दो विश्व युद्व का दंश झेल चुकी है। भारत समेत दुनिया के अन्य देश भी कुछ विषम परिस्थितियों के दौर से गुजरे हैं। इस स्थिति में यह संदेह होना स्वाभाविक है कि कहीं

भारत की उज्ज्वल ज्ञान परम्परा

(संस्कृत एवं अन्य विषयों के अन्तःसम्बन्ध के सन्दर्भ में)

सम्पादक

डॉ. चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

संस्कृति प्रकाशन, वाराणसी

28	अर्थशास्त्र के विकास में संस्कृत साहित्य का योगदान	दिवाकर यादव	107-110
29	भारतीय शिक्षा परम्परा तथा आधुनिक शिक्षा पद्धति	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. राजेश कुमार चौरसिया	111-113
30	भारतीय शिक्षा परम्परा तथा आधुनिक शिक्षा पद्धति	डॉ. ममता चौधरी	114-117
31	प्राचीन भारत में वैदिक शिक्षा व्यवस्था	वन्दना सिंह	118-120
32	भारतीय शिक्षापरम्परा की प्रासंगिकता आधुनिक शिक्षा के सन्दर्भ में	डॉ वन्दना सिंह	121-124
33	आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का मूल्य संकट और स्वामी दयानन्द का शैक्षिक चिन्तन	श्याम मोहन सिंह	125-129
34	भारतकी उज्ज्वल ज्ञानपरम्परा में राजनीति,शिक्षा, समाज और शिक्षक	डॉ. अरुण कुमार सिंह	130-131
35	वैश्विक ज्ञान में संस्कृत भाषा और भूगोल का योगदान	डॉ. घनश्याम दुबे	132-137
36	संस्कृत वाङ्मय में लोक कल्याण : एक वैश्विक दृष्टि	डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र	198-140
37	वर्तमान समस्याओं का नैदानिक विमर्श : वैदिक वाङ्मय के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. सन्ध्या ठाकुर	141-143
38	कालिदास का नैतिक बोध- रघुवंश महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. राजीव दुबे	144-146
39	ऋग्वैदिक कालीन जीवन की प्रासंगिकता	डॉ. सुरेश यादव	147-149
40	युवाओं के जीवन में योग की प्रासंगिकता	अमित कुमार राय	150-151
41	स्मृतियों में वर्णित विधि व्यवस्था	डॉ. नीरज कुमार मिश्र	152-154
42	मर्यादा और मानवता का कुशल वाहक मानस	डॉ. प्रमोदकुमार श्रीवास्तव'अनंग'	155-158
43	संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का अन्तःसम्बन्ध	डॉ. दीपशिखा शुक्ला	159-160
44	प्राचीन भारतीय धार्मिक साहित्य में रुद्र-शिव की कल्पना	डॉ. हरिश्चन्द्र यादव	161-163
45	संस्कृत एवं विभिन्न धर्मों का अन्तःसम्बन्ध	डॉ. ईश्वरचन्द्र पाण्डेय	164-168
46	भारतीय चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद का योगदान	डॉ. पूनम देवी	169-172
47	संस्कृत नाटकों में नायक के सहायकों की भूमिका	डॉ. रामविलास सिंह	173-174
48	भारतीय शिक्षा परम्परा तथा आधुनिक शिक्षा पद्धति	डॉ. लता देवी	175-176
49	पातञ्जल योगदर्शन में अष्टांगों का सामाजिक एवं वैयक्तिक महत्त्व	पूजा सिंह	177-184
50	भारतीय दर्शन परम्परा को नव्य न्याय का योगदान	खुशबू शुक्ला	185-189
51	भारतीयदर्शनेषु योगदर्शनस्य महत्त्वं वैशिष्ट्यञ्च	प्रकाशरञ्जनमिश्रः	190-193
52	योगदर्शन एवं भारतीय अध्यात्म की प्रासंगिकता	मालती मिश्रा	194-196
53	योगदर्शन एवं भारतीय अध्यात्म की प्रासंगिकता वैश्विक परिप्रेक्ष्य में	वन्दना श्रीवास्तवा	197-199
54	हठयोग के ग्रन्थों में ज्ञान-प्रक्रिया का स्वरूप	भूदेव	200-202
55	साहित्य, सङ्गीत एवं कला के विकास में संस्कृत का योगदान	नीलम पाण्डेय	203-204
56	साहित्य, सङ्गीत और कला के विकास में संस्कृत का योगदान	प्रीति शर्मा	205-207
57	वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु-शिष्य परम्परा की उपादेयता	अंजू वर्मा	208-209
58	वैदिककालीन शिक्षण पद्धति का वर्तमानकालीन-शिक्षण पद्धति से अन्तःसम्बन्ध	दिव्या मिश्रा	210-211
59	भारतीय चिकित्सा पद्धति की वर्तमान में प्रासंगिकता	प्रवीण कुमार	212-216
60	भारतीय शिक्षा परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति	डॉ.सुनीता सिंह, सुश्री ज्योति	217-219
61	इतिहास का संस्कृत से अन्तःसम्बन्ध	महेन्द्र नाथ	220-221

ISBN- 978-93-85717-98-7

प्राचीन भारत में वैदिक शिक्षा व्यवस्था

–वन्दना सिंह*

अपनी जन्मजात मूल प्रवृत्तियों और संवेगों से आवृत्त मनुष्य एक पशुवत् प्राणी के सदस्य है, परन्तु यह शिक्षा ही है जो समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा उसे पशु–स्तर से उठाकर मानव–स्तर पर प्रतिष्ठित करती है। यह सम्पूर्ण मानव समाज एवं मानव जाति के अभ्युत्थान एवं विकास की आधारशिला है। यह मनुष्यों की जन्मजात पाशविक प्रवृत्तियों का परिष्कार कर उनकी विशिष्ट योग्यताओं, क्षमताओं और कौशलों का विकास करती है। यह मनुष्य को अनुभवी और ज्ञानवान बनाकर उनके आचरण व व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाती है। शिक्षा मनुष्यों के व्यक्तिगत उन्नयन के साथ–साथ संपूर्ण मानव समाज एवं मानव जाति के अभ्युत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। *चाहे व्यक्ति हो, समाज हो अथवा राष्ट्र सभी के विकास और उन्नति की एकमात्र कसौटी है– 'शिक्षा'।* यदि हम अपने जीवन में से समस्त शिक्षाजन्य उपलब्धियों को हटा दें तो जीवन में कुछ भी अर्थपूर्ण अवशेष अवशेष होगा। डॉ अल्तेकर का कहना है कि *'शिक्षा प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।'*

मानव जीवन के सन्दर्भ में शिक्षा के उपर्युक्त महत्व को देखते हुए सहज ही यह कल्पना की जा सकती है कि शिक्षा व्यवस्था का प्रारम्भ सामाजिकता के विकास के साथ–साथ ही हुआ था। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य ने अपनी जन्मजात मूल प्रवृत्तियों को परिष्कृत करना, अन्य व्यक्तियों के साथ सहयोग और सामंजस्य स्थापित करना तथा सभ्यता एवं विकास के मार्ग पर कदम–दर–कदम आगे बढ़ना सीखा। इतिहासकारों के अनुसार भारत में शिक्षा का आरम्भ आज से लगभग 4000 वर्ष पूर्व ही हो गया था जब कि अन्य देशों के लोग अभी पशुवत् जीवन ही जी रहे थे। प्राचीन भारत के ऋषियों एवं मुनियों ने सभ्यता के प्रारम्भ में ही शिक्षा के महत्व को पहचान लिया था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव जाति, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। इसी ध्येय से उन्होंने देश में शिक्षा की समुचित और सुदृढ़ व्यवस्था की थी।

शिक्षा का मानव से अटूट नाता है। सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य अपनी एवं भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा का सुनियोजित प्रबन्ध करता है। समय के साथ–2 हमारी आवश्यकताओं, समाज के स्वरूप और शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन होता रहता है। अतः मानव जीवन के सापेक्ष शिक्षा व्यवस्था के विकास और महत्त्व को समझने के लिए शिक्षाविदों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ऐतिहासिक वर्गीकरण करते हुए उसे तीन मुख्य भागों में वर्गीकृत किया है–1. प्राचीन भारतीय शिक्षा, 2. मध्यकालीन शिक्षा और 3. आधुनिक पाश्चात्य या अंग्रेजी शिक्षा। प्राचीन भारतीय शिक्षा को पुनः दो भागों में वर्गीकृत किया गया है– वैदिक शिक्षा और बौद्ध शिक्षा।

वैदिक साहित्य और ज्ञान की परम्परा पर आधारित वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ वैदिक काल से माना जाता है। वैदिक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः गुरुकुल और आश्रम व्यवस्था पर आधारित थी। बौद्ध शिक्षा का प्रारम्भ बौद्ध धर्म के विकास के साथ पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था। बौद्ध मठों और विहारों में बौद्ध धर्म के आदर्शों के अनुरूप जिस शिक्षा की व्यवस्था की गयी उसे ही बौद्ध शिक्षा कहा जाता है। मध्यकालीन भारत में मुस्लिम धर्म पर आधारित राजनैतिक सत्ता के संरक्षण में मकतबों और मदरसों में जो शिक्षा व्यवस्था प्रारम्भ हुई उसे मध्यकालीन या इस्लामी शिक्षा व्यवस्था कहा जाता है। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कम्पनी शासन के अधीन लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान की जिस शिक्षा की आधारशिला रखी उसे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था कहा जाता है और उसका विस्तृत प्रभाव आज तक के शैक्षिक प्रबन्ध में दिखाई पड़ता है।

भारत में आज तक जितनी भी शैक्षिक व्यवस्थाएँ विकसित हुई, उनमें वैदिक शिक्षा व्यवस्था सर्वाधिक प्राचीन और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वैदिक काल से लेकर आज तक के भारत की सभ्यता और संस्कृति तथा

*(असि0प्रोफेसर–बी0एड0) शठ महाविद्यालय, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल।

ISBN- 978-93-85717-98-7

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का मूल्य संकट और स्वामी दयानन्द का शैक्षिक चिन्तन

–श्याम मोहन सिंह*

प्राचीन काल से ही शिक्षा के बारे में कहा जाता है कि यह मनुष्य को अपने जाति, समाज और देश के साथ सम्पूर्ण विश्व का सुसभ्य, सुशील, सुसंस्कृत और सुयोग्य नागरिक बनने का पथ प्रशस्त करती है। यह मनुष्यों का केवल व्यक्तिगत उन्नयन ही नहीं करती, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज एवं मानव जाति के अभ्युत्थान एवं विकास की आधारशिला होती है। परन्तु आज जब हम इक्कीसवीं सदी में पहुँच गए हैं, शिक्षा का स्वरूप और उद्देश्य बदल गया है।

आज शिक्षा वह है, जो रोजी दे। हमारी इस शिक्षा से और हमारे जीवन से शाश्वत् मानवीय मूल्य और नैतिक आदर्श विलुप्तप्राय हो चुके हैं। आज हम निकृष्ट और तुच्छ भौतिकतावादी मूल्यों से नाता जोड़े बैठे हैं। आज यदि शिक्षा हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक न हो तो उसे निरर्थक माना जाता है और यही वह मूल कारण है जिसने हमारे जीवन से त्याग, दया, प्रेम, परोपकार, करुणा, मैत्री, सहिष्णुता, उदारता, संयम, विवेक, नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी, जैसे शाश्वत् मूल्यों को विलुप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है। भौतिकवादी संस्कृति ने हमारा चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक पतन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की यह विकृति तात्कालिक नहीं है। इसका प्रारम्भ कम्पनी शासन के अधीन आधुनिक आंग्ल शिक्षा व्यवस्था की शुरुआत के साथ ही हो गया था। यह वही समय था, जब लार्ड मैकाले ने निस्यन्दन सिद्धान्त के साथ **अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आधुनिक आंग्ल शिक्षा व्यवस्था** का प्रतिपादन किया था। वुड के **घोषणा–पत्र** में भी मैकाले की **अंग्रेजी की शिक्षा की नीति** को ही अपनाने की बात कही गयी। तब से लेकर आज, तक भारतीय शिक्षा के विकास के सम्बन्ध में जितने भी प्रयास हुए, सब एक ही पटरी पर चले। भारतीय तत्त्वों की बात की गयी, लेकिन दृष्टिकोण पाश्चात्य और अंग्रेजी–परस्त ही रहा। स्वतन्त्रता के पूर्व और बाद के प्रायः सभी शिक्षा आयोगों और समितियों ने सिर्फ शिक्षा की मात्रात्मक वृद्धि में सहयोग किया, फलतः इसका गुणात्मक विकास और ज्यादा नकरात्मक होता गया। कभी भी, किसी भी सरकार ने ईमानदारीपूर्वक शिक्षा के प्रबन्ध में भारतीय तत्त्वों और भारतीय तौर–तरीकों को महत्त्व और स्थान नहीं दिया।

यह एक महत्वपूर्ण संयोग है कि जब उन्नीसवीं सदी के मध्य में मैकाले की शिक्षा नीति को चार्ल्स वुड के घोषणा–पत्र द्वारा अमलीजामा पहनाया जा रहा था, उसी समय स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले पाश्चात्य आंग्ल शिक्षा व्यवस्था की जगह **'विशुद्ध वैदिक परम्परा पर आधारित भारतीय शिक्षा व्यवस्था'** की एक सुनियोजित रूपरेखा का प्रतिपादन किया। स्वामी दयानन्द उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत एवं महान समाज–सुधारक थे। उन्होंने समाज सुधार के लिए 'शिक्षा' को अपना अस्त्र बनाया। वे मानते थे कि केवल शिक्षा ही वह साधन है जिसकी सहायता से मनुष्य अपनी समस्त समस्याओं का समाधान कर सकता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था चारित्रिक संकट की राष्ट्रव्यापी समस्या का निस्तारण करने और नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने में असमर्थ दिख रही है। ऐसी स्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का अनुसरण करके इन्द्रिय–संयम, विवेक, चरित्र–निर्माण, सदाचरण, अहिंसा, परोपकार, राष्ट्र–प्रेम, ईमानदारी, सहिष्णुता, उदारता, दया, आदि सद्गुणों और मूल्यों का संवर्द्धन और विकास किया जा सकता है। स्वामी जी के अनुसार *'जिस शिक्षा का प्रभाव हमारे चरित्र पर न पड़े वह शिक्षा निरर्थक है'*। आगे महात्मा गाँधी ने भी चरित्र की शिक्षा को ही सर्वश्रेष्ठ माना है। चरित्रवान नागरिक ही राष्ट्र की महानता के संस्थापक होते हैं। अतः इस बात की

*(असि० प्रोफेसर–बी०एड०) राठ महाविद्यालय, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

ISBN- 978-93-85717-98-7

कालिदास का नैतिक बोधः रघुवंश महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में

–डॉ0 राजीव दूबे*

नैतिक बोध एवं आचरण के दो पक्ष स्वीकार किये जाते है। जिसे नैतिक गुण कहा जाता है उनमें साहस एवं उदारता जैसे कुछ प्रमुख गुण व्यक्ति को समाज में आदर एवं श्रद्धा प्रदान करते हैं। दूसरी श्रेणी के नैतिक गुण व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार, एक–दूसरे के प्रति सम्बन्ध इत्यादि में प्रतिध्वनित होते हैं। यदि दूसरे शब्दों में कहा जाय तो यह कथनीय है कि मनुष्य के समस्त नैतिक गुण सामाजिक जीवन की सीमाओं में परिलक्षित होते हैं। क्योंकि साहस अथवा उदारता इत्यादि विशेषताओं की अभिव्यक्ति समाज में ही सम्भव है अकेले जीवन में इनका प्रदर्शन नहीं हो सकता। नैतिक बोध का अर्थ मानव व्यक्तित्व की उन विशेषताओं की चेतना है, जो मनुष्य को एक सफल एवं सामाजिक व्यक्ति बनाने में सहायक होती है।

चूँकि मनुष्य अपनी समस्त गतिविधियों का सम्पादन समाज में करता है, इसलिये उसके उन गुण–दोषों पर ध्यान आकर्षित होता है, जो समाज में उसकी अच्छी अथवा बुरी स्थिति का निर्धारण करते हैं। लेकिन यह ध्यातव्य है कि मानव जीवन का अस्तित्व केवल समसामयिक समाज में ही विद्यमान नहीं रहता है। उसका अस्तित्व मानव जाति के इतिहास के अतिरिक्त भी विद्यमान रहता है, और ज्यादा सम्भव है कि विश्व–ब्रहामाण्ड के विस्तार में भी उसकी चेतनमय स्थिति हो।[1] अतः यह कहा जा सकता है कि संवेदनशील व्यक्ति अपनी गतिविधियों को इतिहास तथा ब्रहाण्ड की पृष्ठभूमि में आलोचित करता है। यह आलोचना उसे आशावादी अथवा निराशावादी, भाग्यवादी अथवा कर्मवादी और ऐसे ही दूसरे सम्बन्धित मनोभावों से ओत–प्रोत करते हुये उसमें जीवन के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसे जीवन–विवेक कहा जाता है।

मन एवं बुद्धि से विकसित किसी जाति का नैतिक बोध एवं जीवन–विवेक व्यापक एवं अनुभवाधारित होता है। प्रत्येक जातियां अपने–अपने अतीत के अनुभव के आधार पर भिन्न–भिन्न नैतिक बोध एवं जीवन–विवेक का निर्माण करते हैं और उनका प्रयोग अपने जीवन (वर्तमान) में करते हैं। यदि मानव प्रगति जैसे किसी शब्द के अर्थ को माना जाय तो यह स्वीकार करना होगा कि एतिहासिक दृष्टि के प्रगतिशील जातियों के नैतिक–बोध एवं जीवन विवेक में न्यूनाधिक समानता विद्यमान रहती है। यहां यह कथनीय है कि यदि विभिन्न जातियों के प्रगति में कुछ समानता दृष्टिगोचर होती तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके विकसित तत्वों का फायदा अन्य जातियां भी उठा सकती हैं।

भारतीय साहित्य में रघु के वंशजों का जीवन एवं चरित्र मर्यादा बोध का अगाध सागर माना गया है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य में नीति–बोध का विशद वर्णन किया है। इस विवरण में कालिदास की सौन्दर्य–दृष्टि तथा लोककल्याण की दृष्टि, दोनों ही पूर्ण रूप से प्रगट हुये हैं। महाकवि द्वारा रघुवंशी वीरों के सन्दर्भ में किये गये चरित्र सम्बन्धी विवरण भारतीय नीति–बोध के अनुकरणीय एवं उदात्त उदाहरण प्रस्तुत करते है।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश के वीर नायकों के नैतिक व्यक्तित्व को अनेक स्थानों पर वर्णित किया है। रघुवंश के प्रथम सर्ग के आरम्भ मे उक्त वीरों का परिचय देते हुये कालिदास लिखते हैं– रघुवंश के वीर राजा आजीवन शुद्ध रहते थे। वे तब तक किसी कार्य को करते थे, जब तक उसका फल प्राप्त न हो जाय। वे विधि ा पूर्वक यज्ञादि करते थे, भिक्षुओं की कामनायें पूर्ण करते थे, अपराध के अनुपात में दण्ड देते थे और समय पर सोकर उठते थे। वे त्याग के लिये धन एकत्रित करते थे, सत्य के लिये मितभाषी बने रहते थे। यश के लिए विजय के आकांक्षी रहते थे और संतान के लिए विवाह। वे बाल्यावस्था में विद्या का अभ्यास करते थे और यौवनकाल में विषयों की इच्छा, वृद्वावस्था में वे मुनियों की भाँति आचरण करते थे और अन्त में योग द्वारा शरीर का त्याग करते थे। कवि के इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि रघुवंशी राजा वर्णाश्रम व्यवस्था के आदर्श पालनकर्ता थे और साथ ही सक्षम कार्यसाधक भी थे।[2]

*असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढवाल उत्तराखण्ड

नेहरु व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

एक पड़ताल

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. संगीता सिन्हा

विषय–सूची

	समर्पण	*v*
	पुरोवाक्	*vii*
	आमुख	*xvii*
	संपादकीय	*xxv*
1.	पं0 नेहरू का लोकतंत्र एवं धर्म *—डॉ. राजीव दुबे*	1
2.	जवाहरलाल नेहरू और सांप्रदायिकता : एक अवलोकन *—डॉ. विशाखा सिंह*	13
3.	नेहरु दर्शन में अंतर्राष्ट्रीयतावाद *—भरत मौर्य, मोनिका कुमारी*	27
4.	आधुनिक भारत और पं0 नेहरू *—सना उन्निसा*	37
5.	लोकतंत्र और विदेश नीति के विशेष संदर्भ में पं0 नेहरू *—जितेन्द्र दत्त त्रिपाठी*	42
6.	पं. नेहरू की विविध दृष्टि : एक विश्लेषण *—डॉ. पुनीत कुमार*	64
7.	पं0 नेहरू और लोकतंत्र *—डॉ. पवन कुमार शर्मा*	74

1

पं0 नेहरू का लोकतंत्र एवं धर्म

14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में जन्म से पूर्व जवाहर लाल नेहरू के पुरखे मुगल सम्राज्य के उस दौर में कश्मीर आए जब दिल्ली का सम्राट फर्रूखसियर था। नेहरू जी के जो पुरखे सर्वप्रथम दिल्ली आये उनका नाम राज कौल था। कश्मीर के संस्कृत एवं फारसी के बड़े विद्वानों में से एक थे। दिल्ली में इन्हें जागीर प्रदान की गयी थी। इन्हें जो मकान प्राप्त हुआ था वह नहर के किनारे था, इसी कारण इनका नाम नेहरू पड़ा। इनका परिवारिक नाम कौल से बदलकर कौल नेहरू हो गया तथा आगे चलकर कौल लुप्त हो गया और केवल नेहरू बचा रहा। कालान्तर में इनका परिवार आगरा आ गया। आगरा में ही नेहरू के पिताजी मोती लाल नेहरू का जन्म हुआ। तारीख थी 6 मई 1861। यहीं वह दिन, तारीख व महीना है जब गुरूदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर का जन्म हुआ। मोती लाल जी के पिताजी की मृत्यु इनके जन्म के पूर्व ही हो गयी थी। मोती लाल जी का भरण–पोषण उनके दो भाइयों की जिम्मेदारी बनी। इनके एक भाई अर्थात जवाहर लाल के छोटे चाचा नन्दलाल नेहरू आगरा के हाइकोर्ट में वकालत करने के पूर्व खेतड़ी के दीवान थे। मोती लाल जी का बचपन उनकी छत्रछाया में बीता। कालान्तर में जब हाईकोर्ट इलाहाबाद स्थानान्तरित हुआ तब पूरे नेहरू परिवार का घर इलाहाबाद बन गया। इसके बाद की कहानी जवाहर लाल नेहरू के सृजन की कहानी है, जिससे प्रायः लोग परिचित हैं। यह सर्वविदित है कि एक

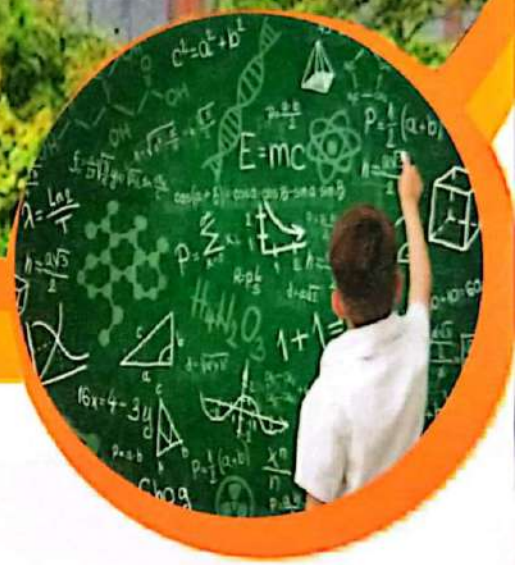

माध्यमिक शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ

छत्रसाल सिंह
शाहीन फातिमा खान

11. माध्यमिक शिक्षा और समस्याएँ 115
डॉ. पंकज सिंह
12. माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियां एवं समाधान 145
डॉ. हनुमान प्रसाद मिश्रा
13. माध्यमिक स्तर पर मूल्य शिक्षा की आवश्यकता 157
डॉ. श्याम मोहन सिंह
14. माध्यमिक शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व 174
डॉ. ज़की मुमताज़
15. किशोरो के विकास में मूल्य शिक्षा की भूमिका 183
डॉ. प्रिया सोनी खरे
16. माध्यमिक शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद NCERT की भूमिका 190
डॉ. हृषीकेश मिश्र
17. माध्यमिक शिक्षा में मूल्यांकन: राउटर के संदर्भ में 197
डॉ. नन्हे सिंह
18. बालकेन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य एंव महत्व 212
डॉ. आफाक नदीम खान
19. माध्यमिक शिक्षा के विकास में शिक्षक की भूमिका 219
डॉ. राम कुमार सिंह
डॉ. छत्रसाल सिंह
20. शिक्षा की रूपरेखा और शिक्षक 223
डॉ. ओम प्रकाश सोनी
21. स्वतंत्रता पश्चात् भारत में महिला शिक्षा : माध्यमिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में 230
डॉ. राजकुमार त्रिपाठी
22. माध्यमिक शिक्षा का प्रसार एवं सुधार : विभिन्न आयोगों एवं समितियों की भूमिका 239
साधना त्रिपाठी

13.

माध्यमिक स्तर पर मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

डॉ. श्याम मोहन सिंह*

मूल्य क्या हैं ?

शिक्षा का मुख्य कार्य जैविक मानव को सामाजिक मानव में रूपांतरित करना है। रूपांतरण की यह प्रक्रिया सामाजीकरण के नाम से जानी जाती है। सामाजीकरण की यह प्रक्रिया शिक्षा अर्थात् सीखने-सिखाने के माध्यम से आगे बढ़ती है। सामाजीकरण की इस प्रक्रिया में शिक्षा का कार्य लोगों को अच्छे-बुरे, सही-गलत, उचित-अनुचित इत्यादि की पहचान करना, उनमें अन्तर स्थापित करना और बुरे, गलत तथा अनुचित का परित्याग कर अच्छे, सही और उचित का अनुसरण करना सिखाना है। सामाजीकरण के इस क्रम में शिक्षा निरन्तर मानव व्यवहार का परिमार्जन, परिष्करण और उन्नयन करती रहती है। व्यवहार उन्नयन की कसौटी प्रारंभ में व्यक्तिगत हित द्वारा निर्धारित होती है, परंतु शीघ्र ही सार्वजनिक हित को अपना लिया जाता है कि 'जो सबके लिए अच्छा हो वही वस्तुतः अच्छा है, जो सबके लिए उचित हो वही वास्तव में उचित है और जो सब के लिए सही हो वही वास्तव में सही है।' धीरे-धीरे सार्वजनिक या सामान्य हित पर आधारित मानवीय व्यवहार की इन कसौटियों को परिभाषित कर मानकों के

*असिस्टेंट प्रोफेसर, राठ महाविद्यालय, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड।

ISBN 978-93-91681-66-1

भारत के महान

शिक्षा शास्त्री एवं पथ प्रदर्शक

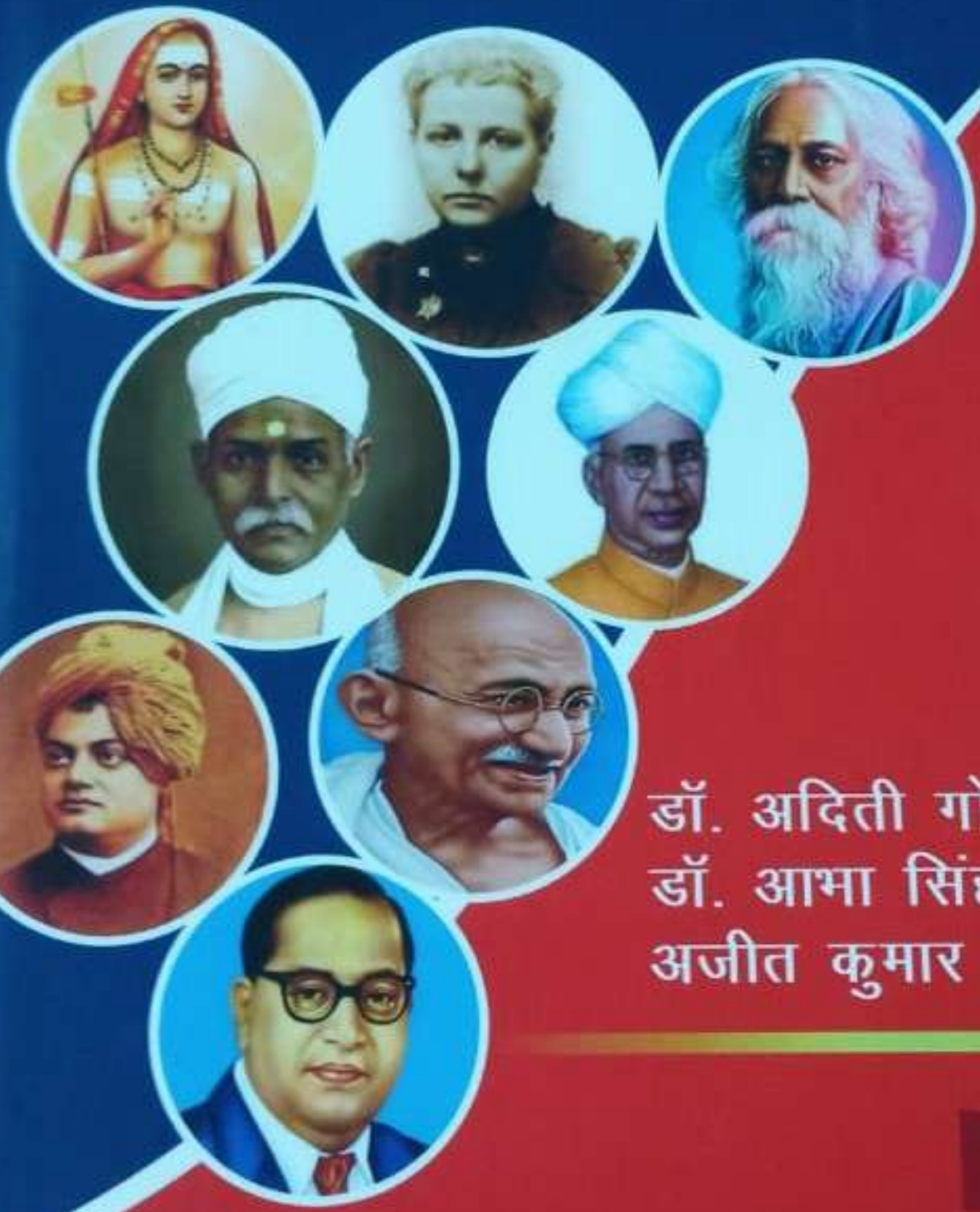

डॉ. अदिती गोस्वमी
डॉ. आभा सिंह
अजीत कुमार मिश्र

अनुक्रम

प्रस्तावना iii

1. आदिगुरू शंकराचार्य 1
   डॉ. मंजूबाला
2. एक शिक्षाशास्त्री के रूप में स्वामी दयानन्द 10
   डॉ. बासुदेव प्रजापति
3. महान शिक्षा शास्त्री, रचनात्मक विचारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं वर्तमान 16
   डॉ. गंगणे जीवन सुदामराव
4. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 2
   डॉ. उमा अरमो
5. शैक्षिक चिन्तक-स्वामी विवेकानन्द 3
   श्रीमती बन्दना सिंह
6. स्वामी विवेकानंद : भारतीय शैक्षिक विचारक 4
   डॉ. शगुफ्ता खानम
7. स्वामी विवेकानन्द : युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत 5
   डॉ. जनक सिंह कुशवाह एवं डॉ. सुधीर कुमार पाठक
8. एक महान समाज सुधारिका : डॉ. (श्रीमती) एनी बेसेंट
   अजय कुमार

शैक्षिक चिन्तक–स्वामी विवेकानन्द

श्रीमती बन्दना सिंह

जीवन-वृत्त

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कोलकाता के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। नरेंद्र जी के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माता का नाम श्रीमती भुवनेश्वरी देवी था। इनके पिता कोलकाता के उच्च न्यायालय में वकील थे। नरेंद्र जी का बचपन से ही पूजा-पाठ, धर्म-कर्म तथा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में रुचि थी क्योंकि इनका पारिवारिक वातावरण धार्मिक था। नरेंद्रनाथ की शिक्षा का आरंभ इनके घर से ही हुआ। यह बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। 7 वर्ष की आयु में इन्हें मेट्रोपॉलिटन कॉलेज में भर्ती किया गया। पढ़ाई के साथ साथ नरेंद्रनाथ की खेलकूद ,व्यायाम, संगीत तथा नाटक आदि में भी खूब रुचि थी। 16 वर्ष की उम्र में इन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तत्पश्चात इन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया और उसके बाद जनरल असेंबली इंस्टिट्यूशन में पढ़ने गए। नरेंद्रनाथ ने कॉलेज की पढ़ाई के साथ साहित्य दर्शन और धर्म का भी अध्ययन किया। यह ब्रह्मचर्य का पालन करते थे तथा प्रार्थना उपासना और ध्यान में मग्न रहते थे।

नवंबर 1881 में कोलकाता में ही स्थित दक्षिणेश्वर मंदिर जाने और स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी का नरेंद्रनाथ के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके संपर्क में नरेंद्र जी 6 वर्ष तक रहे और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करके नरेंद्रनाथ से

असिस्टेंट प्रोफेसर (बी.एड. विभाग), राठ महाविद्यालय, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 : MAKING EDUCATION MORE INCLUSIVE AND EMPLOYABLE

Dr. Santeshwar Kumar Mishra

NEHRU GRAM BHARATI
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
U/S-3 OF UGC ACT 1956

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

MAKING EDUCATION MORE INCLUSIVE AND EMPLOYABLE

EDITOR
Dr. Santeshwar Kumar Mishra

32.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समावेशी शिक्षा के मुद्दे और प्रभाव *डॉ0 शिवाधेश यादव*	261
33.	शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा की उपयोगिता डॉ0 देवेन्द्र यादव एवं भरत कुमार सोनी	268
34.	शिक्षा में शिक्षकों एवं छात्रों के लिए इंटरनेट की उपयोगिता डॉ. अनुपमा सिंह	275
35.	व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्धन में एनईपी-2020 डॉ. मनोज कुमार सिंह	285
36.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भूमिका सशक्त भारत की संजय पाण्डेय	295
37.	आधुनिक कालीन प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था साधना त्रिपाठी	301
38.	महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन वन्दना सिंह	310
39.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और निपुण भारत मिशन : एक अवलोकन डॉ0 सत्येन्द्र सिंह	321
40.	उच्च शिक्षा का तकनीकीकरण Dhirandra Pratap Singh Gaur	332

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल संवर्धन में एनईपी-2020

डॉ. मनोज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर(बी.एड.)
राठ महाविद्यालय, पैठाणी
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

सार-राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 21वीं सदी के छात्रों के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ संरेखित एक नई प्रणाली बनाने के लिए शैक्षिक संरचना नियमों और शासन सहित शिक्षा के सभी पहलुओं में संशोधन और सुधार का प्रस्ताव है। नीति के अनुसार 2025 तक स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50% शिक्षार्थियों का व्यावसायिक शिक्षा से संपर्क होगा। इसे कौशल आधारित शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। व्यावसायिक शिक्षा आर्थिक विकास में सहायक होती है। एनईपी विभिन्न स्तरों पर उद्योग को संलग्न करके उद्योग लिंकेज और मांग-संचालित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने का इरादा रखता है, जिसमें एचईआई में सह-विकसित पाठ्यक्रम और ऊष्मायन केंद्रों का विकास शामिल है। इसके अलावानीति में अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखण की भी परिकल्पना की गई है। कौशल अंतराल विश्लेषण और स्थानीय अवसरों के मानचित्रण के आधार पर व्यावसायिक शिक्षा के लिए फोकस क्षेत्रों का चयन करने का इरादा है। जहां तक कुशल जनशक्ति की निरंतर आपूर्ति का संबंध है, नीति में व्यावसायिक शिक्षा और आजीवन सीखने के लिए बढ़ी हुई प्रेरणा से नियोक्ताओं को आराम मिलने की संभावना है और व्यावसायिक प्रणाली की समग्र आपूर्ति-पक्ष की मान्यता में सुधार होगा। नीति का उद्देश्य चरणबद्ध तरीके से सभी शैक्षणिक संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े सामाजिक स्थिति पदानुक्रम और व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करना है। यह पेपर व्यावसायिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति और एनईपी 2020 में भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

कीवर्ड– एनईपी, व्यावसायिक शिक्षा, कुशल-जनशक्ति, व्यवसाय, उद्योग,आर्थिक विकास।